श्री पुरोहित तिरुनारायण अय्यंगार नरसिम्हाचार
Sri Purohitha Tirunarayana Iyengar Narasimhachar

श्री पुरोहित तिरुनारायण अय्यंगार नरसिम्हाचार, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान कर रही है, कन्नड के लब्धप्रतिष्ठ कवि, कहानीकार, गीति-नाट्य लेखक, निबन्धकार और आलोचक हैं।

आपका जन्म 1905 में मेलुकोटे में हुआ, जो कर्नाटक में संस्कृत विद्या का प्रसिद्ध केन्द्र है। आपने स्कूली शिक्षा संस्कृत पाठशाला से और स्नातक उपाधि महाराजा कॉलेज, मैसूर से प्राप्त की। आपने तत्कालीन मैसूर सरकार के सैन्य प्रशासन कार्यालय में पदभार ग्रहण किया और बाद में मैसूर विधानमण्डल सचिवालय में वाद-विवाद के सम्पादक रहे। कन्नड विश्वकोश के अनुवादक और अंग्रेज़ी-कन्नड शब्दकोश के सम्पादक के रूप में आपने कन्नड भाषा और साहित्य को समृद्ध किया।

आपको श्रद्धापूर्वक लोग 'पुतिना' के नाम से बुलाते हैं। आप आधुनिक कन्नड साहित्य के महत्त्वपूर्ण कवियों में से एक हैं।

कन्नड में आपकी 33 कृतियाँ प्रकाशित हैं। आपकी काव्य कृतियों में *हणते* (1933), *मांदळिरु* (1938), *शारद यामिनी* (1944), *गणेश दर्शन* (1947), *रससरस्वती* (1954), *मलेदेगुला* (1955), *हृदयविहारी* (1966), *इरुळमेरुगु* (1974), *हळेबेरु होसाचिगुरु* (1988) सम्मिलित हैं।

नरसिम्हाचार एक प्रतिष्ठित नाटककार हैं। आपने रुचिकर और मधुर काव्यात्मक एवं गीतिपरक नाटक लिखे हैं। आपके प्रख्यात गीति नाट्यों में *अहल्ये* (1941), *गोकुल निर्गमन* (1955), *दोणिय बिनद मत्तु कवि, शबरि, हरिणाभिसरण, हंस दमयंती मत्तु इतर रूपकगळु* सम्मिलित हैं। *विकटकवि विजया* और *सत्यवान हरिश्चन्द्र* अन्य उल्लेखनीय नाटक हैं।

गद्य लेखन में रुचिकर निबंधों, कहानियों तथा रेखाचित्रों का संग्रह *रामाचारिय नेनपु* (1931), कहानी-संग्रह *ध्वजरक्षणे*, शब्दचित्रों और प्रहसनों का संकलन *रथसप्तमी* और चिन्तनपरक निबंधों का संग्रह *ईचलुमरद केळगे* सम्मिलित हैं।

'पुतिना' दुर्लभ अनुभूतिक्षमता और विदग्धता वाले समालोचक हैं। *रसप्रज्ञे* और *काव्यकुतूहल* नामक आपकी कृतियाँ काव्यशास्त्र और समालोचनात्मक अन्तर्दृष्टि के लिहाज से उत्कर्ष का मानदण्ड मानी जाती हैं।

आपको आठ संगीतात्मक नाटकों के संग्रह *हंस दमयंती मत्तु इतर रूपकगळु* के लिए 1966 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस कृति के आठ गेयात्मक नाटकों में तीन प्रकरण रामायण से हैं—

Sri Purohitha Tirunarayana Iyengar Narasimhachar, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is an eminent Kannada poet, short story writer, writer of operas, essayist and critic.

Born in 1905 at Melukote, a centre renowned for Sanskrit Scholarship in Karnataka, he had his schooling in Sanskrit Pathashala and took his BA from Maharaja's College, Mysore. He joined the Army Administrative Office of the then Mysore Government and later worked as Editor of Debates in the Mysore Legislature Secretariat. Subsequently, he translated the Kannada Encyclopedia, and also edited the English-Kannada Dictionary, works of seminal significance.

'Putina' to all his admirers and friends, he is one of the important Novodaya poets. His publications include 33 works in Kannada. His poetical works include *Hanathe* (1933), *Mandaliru* (1936), *Sharada Yamini* (1944), *Ganesha Darshana* (1947), *Rasa Saraswathi* (Aesthetic Enjoyment, 1954), *Male Degula* (Hill Temple, 1955). *Hridaya Vihari* (*Play-boy of the Heart*, 1966), *Irula Merugu* (Night's Glory, 1974) and *Haleberu Hosa Chiguru* (Old Root New Shoot, 1988).

As an eminent playwright Narasimhachar has given us delightful musicals and lyrical plays. His celebrated operas include, *Ahalye* (1941), *Gokula Nirgamana* (1945), *Doniya Binada Mattu Kavi, Shabari, Harinabhisarana, Hamsa Damayanti Mattu Ithara Rupakagalu*; *Vikatakavi Vijaya and Satyavan Harischandra* are among his other notable plays.

His prose writings include *Ramachariya Nenapu* (1931), a collection of delightful essays, stories and sketches; *Dhwajarakshane*, an anthology of short stories; *Rathasapthami*, series of vignettes and skits, and *Ichalumarada Kelage* a collection of reflective essays.

'Putina' is a critic with rare perception. *Rasaprajne* and *Kavya Kutuhala* highlight his critical insight in poetics.

The Sahitya Akademi conferred its award on him for his collection of eight musical plays, *Hamsa Damayanti Mattu Ithara Rupakagalu* in 1966. In these plays there are three episodes from the *Ramayana*: the birth of Rama, Rama's

रामजन्म, सीता-राम विवाह और स्वर्ण-मृग प्रकरण। एक प्रकरण महाभारत से है, जिसमें हंस द्वारा राजा नल और दमयंती को मिलाने का प्रसंग है। अन्य चार रचनाएँ प्रकृति की विभिन्न स्थितियों पर हैं— प्रकाशोत्सव की भव्यता *दीपलक्ष्मी*, वसंत की सुषमा *वसंतपंचमी*, वर्षा ऋतु की महिमा *वर्षा हर्ष* और शरद ऋतु का भव्यतम सौन्दर्य *शारद विलास* । अपने मोहक संयोजन और सुंदर लय के लिए, साथ ही अपने अपेक्षित गुण के लिए यह कृति समकालीन कन्नड साहित्य को विशिष्ट योगदान मानी गई। श्री नरसिम्हाचार को एक महान नवान्वेषी माना जाता है, क्योंकि उन्होंने लगभग 25 नये रागों की रचना की है।

नरसिम्हाचार के अतिसंवेदनशील व्यक्तित्व की गहरी जड़ें प्राचीन संस्कृति और प्राचीन काल से समादृत हमारे देश के मानवीय मूल्यों में हैं। ईश्वर के सर्वोच्च विवेक में आपका दृढ़ और अटल विश्वास सभी अंतर्द्वन्द्वों का निराकरण कर देता है। आप कहते हैं, "मेरा मन तुम्हारे बारे में आशंकाओं से उलझता है, लेकिन मेरा हृदय तुम्हें जान कर प्रमुदित है।"

आपकी राय में कविता आम ज़िन्दगी से निर्लिप्त होने का एक माध्यम है। कविता का उद्देश्य मानस को उत्तेजित करना नहीं, बल्कि एक अतिसंवेदनशील अवस्था को शांत और प्रशमित करना है। नरसिम्हाचार की कविता में जो चीज़ टिकी रहती है, वह मूलभूत विचार या बीज-भाव नहीं, बल्कि चिन्तनशील मानस का द्वंद्व है। अपनी प्रख्यात कविता 'नेरळु' (छाया) में कवि वृक्षों और घरों की छतों पर तेजी से उड़ते उक़ाब की छाया देखता है और इससे उन्हें समूचे विश्व पर पड़े गांधीजी के पराक्रमी क़दमों की याद आ जाती है।

नरसिम्हाचार का विश्वास है कि कविता की भाषा को हर प्रकार के बोलचाल के मुहावरे और क्षेत्रीय रूपों से मुक्त होना चाहिए और परिष्कार की निरन्तर प्रक्रिया के माध्यम से कवि को कविता की भाषा गढ़नी चाहिए।

'पुतिना' कविताओं के अपने प्रथम संकलन *हणते* (1933) में सामान्य जीवन में विशिष्ट क्षणों की पहचान के जरिये मौलिक और गम्भीर विचारों को सहज भाषा-शैली में रूपांतरित करते हैं। वह अपने इस और बाद के संग्रहों में भावनाओं की आध्यात्मिक स्थितियों को व्यंजित करने के लिए प्रकृति के सौन्दर्य और ऐश्वर्य का आह्वान करते हैं। बिम्बों के लिए यह प्राचीन मिथकों को आधार बनाते हैं, जिनमें आधुनिक चेतना और अन्तर्दृष्टि व्यंजित की जाती है (*नेरळु*, 1947)।

'पुतिना' को 1966 में कर्नाटक राज्य की साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया और पुन: 1990 में। 1991 में आपको भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से अलंकृत किया। मैसूर विश्वविद्यालय ने 1971 में आपको डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।

नयी कविता आन्दोलन के उद्भट अग्रदूत, अपने सुरीले छंदों से आधुनिक मन के शाश्वत सन्देहों को शांत करने वाले, मिथकों और किंवदंतियों में नये अर्थों की तलाश करने वाले लब्धप्रतिष्ठ नाटककार श्री पु.ति. नरसिम्हाचार हमारे अतिविशिष्ट कवियों और लेखकों में हैं।

कन्नड के एक कवि और लेखक के रूप में इस उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी श्री पुरोहित तिरुनारायण अय्यंगार नरसिम्हाचार को अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

marriage with Sita and the episode of the Golden deer. One episode from the *Mahabharata* is that of the swan bringing King Nala and Damayanti together. The other four are pure creations based on the various moods of nature, the grandeur of the festival of lights, *Deepalakshmi*, the glories of spring, *Vasantapanchami*, the magnificence of the rainy season, *Varsha Harsha* and the enchanting beauty of the Sharad ritu, *Sharadvilasa*. For its charming composition and graceful rhythm as well as for its exquisite poetry, the work has been hailed as an outstanding contribution to contemporary Kannada literature. Further, Narasimhachar has also made his mark as a great innovator in music creating almost 25 new *ragas*.

Narasimhachar's creative sensitivity has its roots deep in the ancient culture and time-honoured human values of our land. His strong and abiding faith in the supreme wisdom of God resolves all his conflicts. He says, "My mind struggles with misgivings about you, but my heart rejoices in comprehending you."

According to him, poetry is a means of distancing oneself from the common run of life. The aim of poetry is not to excite but soothe and assuage the high-strung state of mind. What abides in Narasimhachar's poetry is not just the basic thought or the germinal idea but the dialectics of the meditative mind. In his poem, 'Neralu,' (The shadow) the poet sees the shadow of an eagle, and he relates its soaring over trees and housetops to the gigantic stride of Gandhiji across the world.

Narasimhachar believes that the language of poetry must be shorn of all colloquialism and regional vagaries and through a continuous process of refinement a poet must evolve a language for his poetry.

'Putina' in his first collection of poems, *Hanathe* (1933), conveys in simple language and style, original and profound insights, through the identification of significant moments in simple lives. He evokes in this and later collections the beauty and majesty of nature to suggest spiritual states of being. He draws often on ancient myths for images to crystallize modern consciousness and insights (*Neralu*, 1947).

'Putina' received the Karnataka State Sahitya Academy Award in 1966 and again in 1990. He was honoured with Padmashri in 1991. The University of Mysore conferred a Doctoral degree (honoris causa) on him in 1971.

Pioneer of the New Poetry movement, whose poetry addresses the modern mind full of doubts, an outstanding playwright who explores new meanings in myths and legends, Sri Pu. Ti. Narasimhachar is one of our finest creative minds.

For his eminence as a poet and writer in Kannada, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Purohitha Tirunarayana Iyengar Narasimhachar.